अध्ययन सामग्री ! -

विषय - हिन्दी

वर्ग - स्नातकोत्तर

सेमेस्टर - III

प्रश्न पत्र - नवम्

सुमन कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज आरा।

'गोदान'

संबंधित प्रश्नोत्तर

Scanned with CamScanner

प्र.- 'गोदान' कृषक से मजदूर बनने की त्रासद महागाथा है। स्पष्ट कीजिए।

उ- प्रेमचंद हिन्दी के साथ-साथ उर्दू के भी महानतम भारतीय लेखकों में से एक थे। इनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। ~~इनका जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम मुंशी अजायबराय और माता आनन्दी देवी थी।~~ प्रेमचंद एक संवेदनशील लेखक, सचेत नागरिक, कुशल वक्ता तथा विद्वान संपादक थे। इनकी रचनाएँ- 'सेवासदन', 'रंगभूमि' 'कर्मभूमि' 'गोदान' (उपन्यास), कफन, सद्गति, 'पंचपरमेश्वर' (कहानी) आदि हिन्दी साहित्य की अमूल्य ~~नीधि~~ निधि है।

'गोदान' में गाँव व किसान के जीवन को बहुत ही सच्चाई के साथ चित्रित किया गया है, वह स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बदला जरूर है किन्तु क्या यह बदलाव सही मायने में वास्तविक है? यह सही है कि पहले जैसा जमींदार व उसके कारिंदों का दमनचक्र अब नहीं है। कानून और पटवारियों की मिलीभगत से किसानों की तकदीर का फैसला करने वाले जायज-नाजायज हथकंडे भी अब बीती हुए बात हो चुकी है। पहले जैसे सैकड़ों-हजारों एकड़ जमीन के मालिक भी अब उतने नहीं दिखते; क्योंकि अब जमीन की भी हदबंदी हो चुकी है। ~~पहले~~ और न ही गाँवों में उनका पहले जैसा जोर है। आज किसान अपनी जमीन का खुद मालिक है, कानून उसके साथ है मालगुजारी सीधे बैंक में जमा होती है ऋण के सरकारी बैंक भी है। बेगारी, बंधुआ मजदूरी समाप्त हो चुकी है।

~~ये सब~~ उपर्युक्त ये सारी बातें प्रेमचंद की बेकारी को अतीत के खाते में रखने के लिए बहुत है किन्तु गाँव के नये अभ्युदय

कि यह तस्वीर यथार्थ नहीं है क्योंकि इतने परिवर्तनों के बावजूद गाँवों का यथार्थ आज भी बुनियादी तौर पर सामंती और शोषणमूलक है और धर्म, धन, सत्ता के नए प्रभुओं की मिली-भगत का जीता जागता गवाह है। गाँवों में आज भी वे अधिकार एवं राजनीतिक नेतृत्व उन्हीं गत जमींदारों और उनके संरक्षितों द्वारा निर्मित हैं जिसके प्रतिनिधि 'गोदान' के रायसाहब हैं। गाँवों के पूँजीपतियों का वर्ग या यूँ कहें गाँव के भाग्य रचने वाले भाग्यविधाता राजनीति के जरिए शोषण के नये और परिष्कृत तथा सभ्य तरीके ढूंढ लिये हैं। 3-4 बीघे जमीन वाले होरी जैसे किसान उस समय भी तबाह थे और आज भी हैं। किसान उस वक्त भी तंगहाली की जिन्दगी जी रहा था जो आज भी कायम है। क्योंकि कानून तो है उसके साथ उसका काट भी है। गोबर जैसे युवक आज भी वही सोच रखते हैं जो गोबर का था - किसानी से बेहतर है शहर जा कर काम करना, मजदूरी करना, न चाहते हुए भी गोबर जैसे युवक को विवश होकर शहर की तरफ भागना पड़ता है।

किन्तु, आज भी हमारे ग्रामीण समाज में होरी जैसे अनेक लोग हैं जो सिर्फ 'मरजाद' निभाने के लिए खेती को ढो रहे हैं। ये छोटी सी इज्जत का मोह उनसे छूटे नहीं छूट रहा। गाय की लालसा और मरजाद की रक्षा इन दो लालसाओं के लिए होरी समाप्त हो जाता है। यह एक कृषक की त्रासद गाथा है। इनके पात्र अच्छी तरह से इस बात से अवगत हैं कि मजदूरी खेती से बेहतर है जिस तरह से होरी किसानी से मजदूरी तक पहुँचता है किसी भी किसान की यही स्थिति होगी गरीबी की मार, अलग होना, कर्ज की मार

बैलों का बिक जाना, आधे-साझे की खेती, खेत की नीलामी, और अंत में मजदूरी।

कर्ज देने वाले दातादीन, नोखे, पटवारी आदि सभी किसान के शोषक हैं, और कर्ज का यही विष किसान के लिए धीमा जहर हो रहा है। डॉ० रामविलास शर्मा अपनी पुस्तक 'प्रेमचन्द और उनका युग' में लिखते हैं कि- "गोदान में किसानों के शोषण का ~~रूप का~~ रूप ही दूसरा है। यहाँ सीधे-सीधे राय साहब के कारिंदे होरी का घर लूटने नहीं ~~पहुँ~~ पहुँचते, लेकिन उसका घर लुट जरूर जाता है। यहाँ अंग्रेजी राज के कचहरी-कानून सीधे-सीधे उनकी जमीन छीनने नहीं पहुँचते लेकिन जमीन छीन जरूर जाती है। होरी के विरोधी बड़े सतर्क हैं। वे ऐसा काम करने में झिझकते हैं जिससे होरी दस-पाँच को इकट्ठा करके उनका मुकाबला करने को तैयार हो जाए। वह उनके चंगुल में फँसकर तिल-तिल कर मरता है। लेकिन समझ नहीं पाता कि यह सब क्यों हो रहा है। वह तकदीर को दोष देकर रह जाता है, समझता है; यह सब भाग्य का खेल है, मनुष्य का इसमें कोई बस नहीं।"[1]

इस बात से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामंतवादी और पूँजीवादी कुव्यवस्था दीमक की तरह किसान को अन्दर ही अन्दर खोखला कर देती है और उसे पता भी नहीं चलता व अन्ततः वह ढहकर गिर ही जाता है, जैसे कि - होरी।

होरी अपने जीवन के लगभग 47 साल इसी तरह कष्ट झेलते हुए गुजार देता है। दस-पाँच और गुजर जाते किन्तु भाइयों के बाद बेटा से अलग होकर रहना वह सह नहीं पाता। वह अन्दर तक टूट

जाता है और शोषक शक्तियाँ उसे जमीन से भी बेदखल करने की साजिशें करने लगती है। उसकी जमीन निलामी की कगार पर है। इस अंतिम दौर में उसकी हिम्मत जवाब दे जाती है। किन्तु उसका सर्वनाश तब होता है जब अपनी फूल सी बेटी रूपा को दो सौ रूपए लेकर अपने से दो-चार वर्ष छोटे रामसेवक से शादी कर देता है। रूपये लेकर शादी करना यह आत्मग्लानि उसे झकझोर देती है। वह जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुँच कर सड़क का मजदूर हो जाता है। दिन में खुदाई का काम करता है और रात को होरी और धनिया का देर रात तक सुतली कातना। इस तरह उसके जीवन का अंत हो जाता है। सुतली को बेचने से कमाए बीस आने ही उसका गोदान बनते हैं।

होरी के जीवन का ऐसा अंत सामान्य नहीं, एक पूरी किसान की द्युति की मृत्यु है। होरी गाय की लालसा लेकर मरता है गाय ने ही उसे तबाही की ओर धकेला था। किन्तु उपन्यास की मूल समस्या गौ की प्राप्ति नहीं है, बल्कि उपन्यास का मूल उद्देश्य किसान से मजदूर, दीन से दीनतर होते चले जाते व्यक्ति की तकलीफों से गहरा साक्षात्कार है। इस उपन्यास के माध्यम से प्रेमचंद ने खेती से आजिज आ गए किसान, उसकी व्यथा जो एक किसान को मजदूर बना देती है, या बना रही है ऐसी व्यथा-कथा को बड़े ही मार्मिक व संवेदनात्मक रूप से चित्रित किया है।